

811

आशा भक्ताधि
3753

ASHA ARCHIVES

निमृक्तयनमः॥६॥ हौं रुवाय जलमृक्तयनमः॥६॥ हौं वृद्राय अग्नीमृक्तयनमः॥६॥
हौं उग्राय वायुमृक्तयनमः॥६॥ हौं शिमाय आकाशमृक्तयनमः॥६॥ हौं वैद्युपतययज
मानमृक्तयनमः॥६॥ हौं महादेवाय सोममृक्तयनमः॥६॥ हौं वृं ह्यनाय सूर्यमृक्तयः
नमः॥ मन्त्रस्य सयविवावाय॥ ह्रीं सदाहिवायनमः॥ वृं तिष्ठिः सययुक्त॥ मूलन
प्रियाङ्गुलिः॥ हौं सदाज्ञायनमः॥ ह्रस्ववक्तुः॥६॥ हौं वामदेवायनमः॥ उक्तवक्तुः॥६॥
हौं अष्टायनमः॥ दक्षिणवक्तुः॥६॥ हौं न्यूनव्यायनमः॥ यश्चैव वक्तुः॥ उद्रः॥६॥ हौं वृं
ह्यनायनमः॥ मन्त्रः॥६॥ हौं सदाहिवायनमः॥ वामरागा॥६॥ हौं यै नमः॥ दक्षरागा॥
६॥ गद्ययनमः॥६॥ हौं हिवायनमः॥ रुलाव्या॥ काम्बलायादि॥ ह्रयादीयानेव
यी॥ निवेद्य॥ यायादयं वाक् विमर्त्तुं यथाहाकी उयित्वा॥ उयं निवेद्य॥ ॥ श्रीगु
णुं कारं विन्दुं सयुक्तः॥ निर्व्यक्तं किं यागिनं॥ कामदं भाक् देवेव गुं कारायनमः॥

नमः॥१॥ नमः किं सव्यथा देवानमनीत्राय बीगलः॥ नमः नमः किं देवर्षी नकात्राय
नमो नमः॥२॥ महादेव महात्मानं महा क्लानयत्राय हः॥ महापायकृत्र देवमकात्रः
यनमीनमः॥३॥ शिवेष्टनर्तुर्गन्तार्थलोका नो हि क काम्यया॥ शिवमो कृत्र देवर्षी
कात्राय नमो नमः॥४॥ वारुनेष्टव रुयस्य वासुकि कट्टरुषर्षी॥ वामिहा किं वन देव
वकात्राय नमो नमः॥५॥ यगुगुस्मिन्नादवा जगद्वायीमर्हः स्वर्षाया गुर्वः यव
देवानीयकात्राय नमो नमः॥६॥ वृषा कृत्र मिदं क्रोत्रयय (०) शिवसैनि (०) सर्वयाय
विनिम्बकं शिवलोके सगच्छति॥७॥ ॐ निषण्णकृत्र श्रीर्षयमार्यः॥ ८॥ ॐ नमः शिवाय
नमः॥ ॥ पुथर्मनु महादेव दिनित्रेयं मर्हः स्वर्षी कर्तृनामचतुर्थष्टव रुषर्षी॥
१॥ यत्रर्मह हिवायं च वरुं कामी गनाहानं॥ मयर्मदेव देवर्षी नीलकं ० मथाष्टमः॥२॥

नवमंत्रेष्टवर्षनामदक्षमं यावन्नीयुयात् नृदुर्मकादहीनामः द्वादहीशिवमूर्धनः ॥३॥ द्वादही
नानिनामानि निर्यस्य १५० न्नवा ॥ (गमर्षं) ह्येव हनं द्य ह्यर्वं क्क ला युनू न ल्य क ४॥ ४॥ शिवा
वद्यानक (ह्येव सवाया हृषवीय नि ४॥) ननलमगनद्या निन्न मिनु विष्क सद्या नक ४॥ ५॥ समु
चर्गे सर्वयाये ४ शिवलीकं मगकृ नि ॥ ००॥ निस्कन्द पुना (ह) शिव द्वादहीनाम कीर्तन समाप्य ॥
हेहो ह्रीमहा देवाय नमः ॥४॥ कृमन्व ॥ मीलन मुद्रान विमर्दन याथ ॥ ००॥ गिया धि वयुजा
विधियमाफ ॥ ७ ॥ १॥ शीय न देवनाये नमः ॥ गहलहाय न कृय या गिनिना मिनु
पिनीं देवी मंगमयी नो मि माह कां पी ० वृयिनि ॥ १ ॥ यद्यहमा मिमहा देवी माह कोय नमः
ह्यर्वी ॥ काल हलील रुलील कालनाम काविही ॥ २॥ यदकृत्रे कमाह पिमी यद ४ यद्य
रुनव ४॥ नविना कृन्द कन्द र्यही कवान वविहृ रि ४॥ ३॥ अद्यापिय स्या जान किनमना गि
पि देवता कयेक स्मान् ककेन नि स्वदृया दृय रावनी ॥ ४॥ वन्दे नाम दम द्वादही कान
हव दृपिही ॥ दर्वि कूल कलाली यथाले सै नि यवा शिवी ॥ ५॥ यदकृत्र महा सूर्य या नमः

यगययी। खक्काधुदिकटाहाने नौ वन्दे मिहि माह को ॥ ६ ॥ यदे कादधमाव वीज
कोहययाइवी। खक्कादिहो कटाहाने जगदशायिह ह्ये ॥ ७ ॥ अकवादिह नौ नद्वयय
हान्नववर्गिणीं। अशगवाइह ह्ये कटियादनिवासिनीं ॥ ८ ॥ कामिकावाहनी
अनी मानात्मानो यनात्यनी ॥ यहामामिमहादेवीं यनमानन्दकृपिणीं ॥ ९ ॥ वग्गस्यकम
थीरगनयस्यामाह ह्ये कटिनीं ॥ वेदतामस्यव (ग्न्यस्थमहायिह्ये कटिनीं ॥ १० ॥ कामय
ह्ये जकावादिहोपी भनन्निवासिनीं ॥ चतुनाकाकोहाह नौ नौ मिहो नियोनाह ॥ ११ ॥ यद
ह्ये नहानि श्रुत्यामाहो नौ वननय ॥ मानात्मानव नवीजं ह्ये वग्गस्यक कटिनीं ॥ १२ ॥ व्हे
निह्ये दहादि ८ (ह्ये के कवनन सर्वमिहिकन। देवा ह्ये खन ह्ये याया कवनन कवननयन ८ ॥
१२ ॥ व्हे निहो नौ नौ नाउ यन देवना दहा (ह्ये के यमाय ॥ ॥ ॥ ॥

१५ नमः ४ छिग (स) धम यनम ॥ ॥ वक्रवैधमवमिनु ही दन नित्य लग्नमवदागमदुर्गा। क
हुलीविवलकाहुमहिर्गद्वाद धानकमवसीनुर्दं रुर्ज ॥ १॥ नम्य कन्दलिनकन्दबादनः
यूकलखमकथादिप्रखया। कोशलकिर्गदलकमहुलगावयूकमवलालयं रुर्ज
॥ २॥ नम्युटपटुगठित्कबालिमा। स्यद्वैमानमहियाटलयुर्ज। चिनकयामिहदिविन्मः
यैवपूर्विन्दुतादमहियी ० मलुली ॥ ३॥ उर्द्धमस्यदूगुरुकमिखामखै। गद्विलासपवि
वक्रहास्यदं। विष्वद्यस्मन्नमर्गोत्कर्णरुर्ग ॥ व्यामृष्टामियुगमादिर्दमया ॥ ४॥ नगुना
थववक्षानविन्दुया ४ कैकुमान्नलमनीनमन्दथा ॥ द्वैद्वमिन्दकनर्कदहीर्गलीमानसं
स्मानकिर्मगलास्यदं ॥ ५॥ निसर्कमहियादुकी। नियमिनायकोलादली। स्रुचक्किष्टव
याहर्हानखसमल्लसञ्चन्द्रिकी ॥ ६॥ यनामृकसभावना। दिगयनीउनीविसूचगुरुजा।

शिवमिच्छीर्णं सुत्रयदावविन्दइदं॥१॥यादृकायैवकंभापुंयैववकाद्विनिर्गनीष्टी
यैवामायरुलदं ययैववाकिइल्लरं॥२॥~~नैमिष्टीवृद्धयामल्लयैवमस्वी~~ ~~सुनीगुन~~
~~कोयदेष्टासमायैष्टा~~ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
१ष्टीगुत्रुथोनमष्टा॥सदाष्टिवैष्टत्रोवृद्धाविक्रवक्रायमाकुली॥गेत्री(ष्टा)ग्रीष्टामिग्री(ष्टा)
कयीलान्दसुत्रुफनष्टा॥१॥सिद्धेष्टामनयिगर्भोमनूयष्टयुष्टदतिकष्टाकिनीगमिष्टमः
रूष्टयैवाथारवगुत्रुफनष्टा॥२॥विद्यावाथोवगावाथोदूर्वामाकोमिकोमनष्टा॥उंगी(ष्टा)वि
वगावाथोकोन्दन्यावाथ्यववत्र॥३॥रुत्रवाष्टकमेरूष्टजंगनकगुत्रुफथा॥विष्टनाः
(था)थमाभ(ष्टा)वष्टिष्टाविष्टरुयकष्टा॥४॥गंगधनगुत्रु(ष्टे)वष्टीष्टीकनगुत्रुफथा॥नावाः
यदायदार्कनष्टीमडीलायविष्टाष्टा॥५॥गुत्रुष्टीविमल्लानन्ददष्टिकेन्द्राकिगीयर्क



सोरिपानीभक्त
 सेधलवराग नो
 वीरध्यानु नो
 नालनीमृदु नो
 वाजिमार नो
 तेकरावार नो
 वाडावको नो
 नोउबाउ
 इदो
 गुवाउसे
 गोघीउ
 लेर १

श्रीलज्जोविरविंताशमलकिभाश
 अताहिंन्नाशबोमिनशरिरचत्वाश
 लखेन्नाशईलजोयेवेस्कि सोस्की
 सदरईन्नाशमीनलजीनलेवेन्नाश
 पीरडावदियेनोअछाहो

पुंगुरकादंत १ मसानुमेगा ५ १ १ ३ आक्रात निरमेरुयना

१५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 सर्वेभक्तकामनासीधायसदा
 करिमातुगोसवधानसत्पथे



पावनेलोवनाएजा

ASHA ARCHIVES

3753

१८५५॥ १८५५॥ १८५५॥















